9

क्या यीशु सचमुच मुर्दों में से जी उठा?

यीशु के जीवन और मृत्यु का सम्भवतया कोई भी पहलू नये नियम की शिक्षा से अधिक विवादास्पद नहीं है कि रोमियों के हाथों क्रूस पर दिए जाने के बाद वह शारीरिक रूप में मुर्दों में से जी उठा। आखिर यह पूरी तरह से सामान्य मानवीय अनुभव पूरी तरह से बाहर है। मृत्यु के साथ हमारे व्यवहार हमें बताते हैं कि लोग इससे उभर नहीं पाते! कुछ लोगों ने दावा किया है कि वे मर गए और फिर उन में प्राण लौट आया! परन्तु ये बहुत ही काल्पनिक है, क्षणिक अनुभव है जिसका प्रमाण नहीं दिया जा सकता। वे लोग भी जो वास्तव में मर गए और उन में प्राण लौट आए, सदा के लिए जीवित रहने की उम्मीद रहीं रखते, जैसा कि नया नियम यीशु के विषय में कहता है। उनके अनुभव, यदि वास्तविक हैं भी तौभी वास्तव में उनका कोई मेल नहीं है। विडम्बना यह है कि बहुत से लोग उन दस्तावेज़ों पर विश्वास करने के बजाय जिसमें यीशु के जी उठने की बात है इस किस्सों के सम्भव होने को अधिक प्राथमिकता देते हैं।

यीशु के जी उठने के विचार का सामना करने पर कइयों का पहला विचार यही होता है कि ''यह नामुमकिन है!'' आम तौर पर उनकी सोच यहीं पर रहती है, क्योंकि आधुनिक विज्ञान ऐसी सम्भावना को नहीं मानता। परन्तु किसी चीज़ के नामुमकिन होने, विशेषकर जब उसमें ईश्वरीय बात हो, कहते समय हमें सावधान रहना चाहिए। वास्तव में यीशु के जी उठने जैसी किसी बात को ''नामुमकिन'' कह देने का एक मात्र ढंग इस सम्भावना को नकार देना है कि परमेश्वर है, जो कि कुछ लोग ऐसा ही करते हैं। जब तक हम परमेश्वर के होने की *सम्भावना* को भी मानते हैं (और, दार्शनिक रूप में कहें तो, हमें माना पड़ेगा, क्योंकि इसे नकारा नहीं जा सकता), तो हम नहीं कह सकते कि यीशु का जी उठना ''नामुमकिन'' है। यदि आप परमेश्वर में विश्वास रखे हैं, तो आपको जी उठने की सम्भावना को मानने के लिए तैयार होना चाहिए। अगला कदम जैसा कि हम ने पहले कहा था, *सम्भावयता* के बारे में पूछना है। इतिहाकार का काम यही है: उस प्रमाण से कहानी को बनाना जो अतीत की घटनाओं से बहुत मेल खाती हो। हमें यीशु के जी उठने के बारे में यही पूछने की आवश्यकता है कि क्या सम्भावना है कि वह मरे हुओं में से जी उठा?

इस प्रश्न का प्रभाव क्या है?

चर्चा के उस भाग में आगे बढ़ने से पहले, हमें रुककर पूछना चाहिए, ''इस प्रश्न का क्या प्रभाव है? हमारे लिए उत्तर देना कितना आवश्यक है?'' हम केवल यीशु के जीवन और मृत्यु पर जितना जानते हैं उसी पर चर्चा करके उसके जी उठने के विवादास्पक के विषय के किसी भी विचार को छोड़ क्यों नहीं देते? क्या हम जी उठने और बात करने से बचकर और हर व्यक्ति को जैसा वह सोचता या सोचती है उस पर छोड़कर ऐतिहासिक और आत्मिक रूप में मज़बूत आधार

पर नहीं होंगे? यह सब अच्छे प्रश्न हैं और इन पर बात की जानी चाहिए।

जब मैं कालेज में था तो मुझ से पुनरुत्थान की ऐतिहासिकता के विषय (यानी पुनरुत्थान वास्तव में हुआ या नहीं) पर एक प्रसिद्ध जर्मन थियोलोजियन का विद्वतापूर्वक लेख पढ़ने के लिए एक डॉक्ट्रिनल सेमिनार में कहा गया। लेखक ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न के लाभ-हानियों पर चर्चा करने के लिए तीस से अधिक पृष्ठ लगाए थे; फिर अन्तिम विशलेषण में वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यीशु के मुर्दों में से जी उठने या न उठने से कोई फर्क नहीं पड़ता। उसने कहा कि आवश्यक यह है कि ईस्टर की सबुह विश्वासी अपने दिल में जी उठने की ''लौ'' जगा सके, चाहे यह वास्तव में हुआ या न। मैं स्तध था! कोई ऐतिहासिक रूप में भी सोचने की *कोशिश* कैसे कर सकता है कि यीशु के मुर्दों में से जी उठने जैसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता? यह प्रसिद्ध विचारक मान्य ऐतिहासिक पूछताछ से काल्पनिक धार्मिक अनुभव में अचानक कैसे बदल सकता है?

चांद पर नील आमस्ट्रांग के चलने पर फिर से विचार करें। वह चांद पर चला या नहीं। हम नहीं कह सकते कि ''चांद पर चलने की चमक'' यह हमारी कल्पनाओं में होने से सचमुच में कोई फर्क पड़ता है या नहीं। यही बात यीशु के जी उठने की है। वह मुर्दों में से जी उठा या नहीं। यह बात पुनरुत्थान को ऐतिहासिक जाच पड़ताल का मान्य विषय बताती है। विशेषकर तब जब हमारे पास ऐसे कई स्रोत हैं जो कहते हैं कि वह जी उठा। इसका अर्थ यह कहना नहीं है कि हम पुनरुत्थान को ''प्रमाणित'' या ''नकार'' सकते हैं, पर निश्चित रूप में हम सम्भावना के प्रश्न पर चर्चा कर सकते हैं। केवल इतना कहत देना ही काफ़ी नहीं होगा कि ''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'' यदि यीशु मुर्दों में से जी उठा, तो हम मानवीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण पल को अप्रासंगिक कहकर खारिज कर रहे होंगे। बौद्धिक ईमानदारी हमें ऐसा करने से रोकती है। हम क्यों करना चाहते हैं? अविश्वासी लोगों को ऐसे सनकी मिथ्य को नकारने के अवसर का स्वागत करना चाहेंगे! हम विश्वासियों को एक बड़ी सच्चाई के रूप में यीशु के पुनरुत्थान को साबित करने के अवसर का स्वागत करना चाहिए!

नये नियम के लेखक इस प्रश्न के प्रभाव से पूरी तरह अवगत थे, जैसा कि उनकी टिप्पणियों से पता चलता है। उन्हें मालू था कि पुनरुथान मसीही विश्वास की आधारभूत अवधारणा है। पौलुस तो यहां तक घोषित करने को चला गया कि पुनरुत्थान की बात को निकाल देने से मसीही संदेश ही अपने आप में अमान्य हो जाता है। 1 कुरिन्थियों 15:3-5 में उसने यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने और जी उठने के बाद दिखाई देने को ''पहल देने वाली'' बातें कहा जिसका उसने कुरिन्थियों में प्रचार किया था। फिर उसने दावा किया,

> और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। ... और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। बरन जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए (1 कुरिन्थियों 15:14-18)।

पौलुस उसके असर से जो उसने प्रचार किया था भागा नहीं। वह बिना हिचक के यह कहने को तैयार था हमारे पापों के लिए मसीह के बलिदान का बचाने वाला संदेश अर्थात सुसमाचार

पुनरुत्थान की वास्तविकता पर भी खड़ा या गिरता है।

''पुनरुत्थान रहित'' मसीहियत क्यों नहीं हो सकती? आखिर, इससे भी यीशु को सम्मान मिलेगा और जीने का अच्छा ढंग बताया जाता। परन्तु पौलुस के अनुसार हमारी मुख्य दिलचस्पी यह नहीं है। रोमियों 1:1-4 में उसने उस सुसमाचार की शानदार समीक्षा की जिसका वह प्रचार करता था:

> ... परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है। ... अपने पुत्र ... हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

पौलुस के यह कहने का क्या अर्थ था कि यीशु ''मरे हुओं में से जी उठने के कारण ... परमेश्वर का *पुत्र ठहरा है*''? कुछ लोगों ने इसका अर्थ यह निकाला है कि यीशु मुर्दों में जी उठने पर *परमेश्वर का पुत्र* बना। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था। जी उठने से यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं ''बना।'' पौलुस के अनुसार इससे ''दिखाया गया'' कि वह परमेश्वर का पुत्र है। यह दिखाया गया था कि यीशु वास्तव में वही था जो उसने होने का दावा किया था। पौलुस को यह बड़े ही निजी ढंग से मालूम था क्योंकि यीशु के मुर्दों में जी उठने को देखकर ही उसने विश्वास किया था कि यीशु ही वह चालबाज़ होने के बजाय जो पहले पौलुस उसके बारे में सोचता था, इस्राएल का होने वाला वास्तविक मसीहा होगा (प्रेरितों 9:1-5; 1 कुरिन्थियों 9:1)।

पौलुस अकेला नहीं था जिसने यीशु के जी उठने को इस प्रकार समझा। प्रेरितों 2:14-36 में इससे मेल खाती बात है जिसे ''पहला मसीही प्रवचन'' कहना सही हो सकता है। यहां यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने के बाद पहली बार उसकी पहचान बताई गई थी। बोलने वाला पतरस था। यह घोषणा करने के बाद कि पिन्तेकुस्त मनाने के लिए यरूशलेम में इकट्ठी हुई यहूदियों की भीड़ ने जो कुछ देखा (2:1-13) वह योएल 2:28 की मसीहा से जुड़ी भविष्यवाणी का पूरा होना था, उसने यीशु की चर्चा आरम्भ की (प्रेरितों 2:22)। ध्यान दें कि पतरस कितनी जल्दी से यीशु के जीवन और मृत्यु की घटनाओं से (2:22, 23) उसके जी उठने की ओर बढ़ गया, जो स्पष्ट रूप में उसके प्रवचन का मुख्य भाग था। भजन संहिता 16 की एक नबूवत के आधार पर उसने तर्क दिया कि *किसी* का मुर्दों में से जी उठना होना था: ''क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा'' (2:27)। फिर उसने दावा किया कि दाऊद अपने बारे में बात नहीं कर रहा हो सकता था, क्योंकि यह सबको मालूम था कि दाऊद मर चुका था और उसे दफ़नाया जा चुका था। उसकी कब्र अभी भी लोगों को मालूम थी। उसने आगे कहा कि दाऊद अपनी बात *नहीं* कर रहा था बल्कि वह ''मसीह [मसीहा] के जी उठने'' (2:31) की बात कर रहा था। फिर उसने समापन किया, ''जी उठना प्रभु और मसीह [मसीहा]'' (2:36)के रूप में यीशु की पहचान का संकेत था। बिना इसके वह केवल एक और झूठा नबी था।

मसीही विश्वास की मान्यता ही इस बात पर आधारित है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा या नहीं। यह थोड़ा विडम्बना होने से बढ़कर है कि आज मसीही कहलाने वाले बहुत से लोग

सुसमाचार के इस पहलू को समझ नहीं पाते।

प्रमाण कहां है?

अब जब हमारे पास उसकी स्पष्ट तस्वीर है, जो यीशु के जी उठने के चर्चा में दावं पर है, तो आइए सम्भवतया के प्रश्न में वापस चलते हैं। क्या कोई प्रमाण है यह सुझाव देता हो कि सम्भवतया यीशु मुर्दों में से जी उठा?[1]

प्राचीन स्त्रोत

इस विषय पर गवाही देने वाले सबसे प्राचीन स्त्रोत नये नियम के लेख ही हैं। यहां जो सबसे अच्छी बात यह है कि सभी प्राचीन लेख एक ही बात को कहते (या मानते) हैं कि यीशु मुर्दों में से जी उठा। सुसमाचार के चारों वृत्तांत यीशु को जी उठा बताते हैं। प्रेरितों के काम पुस्तक में लिखित प्रेरितों का आरम्भिक प्रचारक यही दावा करता है, जैसा कि पौलुस के लेखों में है (1 कुरिन्थियों 15; रोमियों 1:1-4)। पौलुस की बातें विशेष महत्व की हैं, क्योंकि उसने सुसमाचार के वृत्तांतों के लिखे जाने से 20 से 25 साल पहले लिखा (अधिकतर अनुमानों से)। पचास ईस्वी के अन्तिम दशक के बीच में जब पौलुस ने लिखा कि यदि मसीह जी नहीं उठा तो मसीही विश्वास बेकार है (देखें 1 कुरिन्थियों 15)। इससे भी पहले, सम्भवतया 51-52 ईस्वी मे उसने 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 में यह कहा: ''क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।'' कुछ लोग बहस करते हैं कि सुसमाचार के चारों वृत्तांतों के लिखे जाने के समय तक आरम्भिक कलीसिया में ''जी उठने का मिथ्य'' पैदा हो गया था। शायद इस तथ्य के चालीस या अधिक साल बाद। ऐसे मिथ्य के बनने और इसे स्वीकार किए जाने के लिए यह बहुत ही कम समय होगा, परन्तु पौलुस ने यीशु की मृत्यु और जी उठने के लगभग *बीस* साल बाद ही लिख दिया। यरूशलेम में उस फसह के दौरान होने वाली वास्तविक घटनाओं के चश्मदीद अभी जीवित होंगे और यदि यदि यीशु जी उठा न होता, अर्थात यदि काल्पनिक जी उठने के बाद उसकी लाश मिल जाती तो वे इसके विरोध में बहस कर सकते थे। पौलुस ने तो जी उठने के बाद ''पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिन में से बहुतेरे अब तक वर्तमान हैं, पर कितने सो गए'' (1 कुरिन्थियों 15:6) के बारे में बताया। लगता है कि पौलुस कह रहा था कि ''चश्मदीद अभी भी आस पास घूम रहे हैं, जाओ जाकर उनसे पूछ लो!'' यदि पौलुस को मालूम था कि जो वह लिख रहा है वह सच नहीं है तो यह सचमुच में बड़ा साहसी दावा था।

अधिकतर प्राचीन स्त्रोतों में से सभी कहते हैं कि यीशु मुर्दों में से जी उठा। कोई यह नहीं कहता कि वह जी नहीं उठा। यदि पुनरुत्थान रहित मसीहियत होने की बात स्वीकार्य होती तो निश्चित रूप में नये नियम के एक आ अधिक लेखकों ने इसका संकेत अवश्य दिया जाता।[2]

यीशु का दफ़नाया जाना

यह तथ्य कि यीशु क्रूस पर दिए जाने के बाद दफ़नाया गया था हो सकता है कि हमें महत्वपूर्ण न लगे, पर नये नियम के लेखकों के लिए यह महत्वपूर्ण था। सुसमाचार के चारों

वृत्तांत यीशु के दफ़नाए जाने की बात बताते हैं (मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:38-42)। यह वृत्तांत दफ़नाए जाने की यहूदी परम्पराओं से मेल खाते हैं, जहां तक हम अन्य प्राचीन स्रोतों से पता लगा सकते हैं। लाशों को आम तौर पर नहलाकर, मसालों से अभिषेक करके (बदबू दूर करने के साथ-साथ सम्मान के रूप में भी) कफ़न में लपेटकर दफ़नाने के लिए तैयार किया जाता था। मरकुस 16:1 और लूका 24:1 बताते हैं कि रविवार प्रात: भोर को कब्र पर जाने वाली स्त्रियां मसालों से यीशु की लाश को अभिषेक करने के लिए ही आई थीं। याद रखें कि यीशु को हड़बड़ी में दफ़नाया गया था, क्योंकि सब्त का दिन आ रहा था इसलिए ''उपयुक्त'' दफ़नाए जाने का समय नहीं था (यूहन्ना 19:41, 42)। गुफ़ाओं की दीवारों में बनें आलों को जिन्हें बडे-बड़े पत्थरों से डका होता था आम तौर पर दफ़नाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, और कई बार कब्रें आज भी यीशु के समय की फलस्तीन में पाई जाती हैं। सुसमाचार के वृत्तांत यीशु के दफ़नाए जाने की बात बताने में एक दूसरे से सहमत हैं और जो कुछ हमें अन्य स्रोतों से पता चलता है वह उनकी बात से मेल खाता है।

यह तथ्य कि सुसमाचार की पुस्तकों से हमारे पास अधिक से अधिक जानकारी है इस बात का सुझाव देता कि इन लेखकों के लिए यीशु की कहानी का यह पहलू महत्वपूर्ण था। पौलुस ने इस तथ्य को बताया है कि यीशु सुसमाचार के संदेश में जिसका वह प्रचार करता था ''पहली प्राथमिकता'' वाली बातों के रूप में दफ़नाया गया था (1 कुरिन्थियों 15:4)। यीशु का दफ़नाया जाना इतना महत्वपूर्ण क्यों है और यह जी उठने के प्रमाण के रूप में कैसे काम करता है?

इस महत्व को देखना कठिन नहीं है। यीशु का दफ़नाया जाना उसकी मृत्यु को प्रामाणिक बताता है और जी उठने से पहले आवश्यक है। यह जानते कि यीशु शारीरिक रूप में मरा था हमें समझने में सहायता करता है कि उसके ''जी उठने'' से नये नियम का क्या अर्थ है। अन्य शब्दों में यह केवल ''आत्मिक'' जी उठना नहीं था (इसका अर्थ जो भी हो) जैसा कि कई बार सुझाव दिया जाता है, परन्तु उसकी मर चुकी देह का जी उठना है। यह तो ऐसा है जैसे प्राचीन लेखक अग्रिन में किसी सामान्य आपत्ति का जो जी उठने के सम्बन्ध में उठाई जा सकती है: यह अवधारणाएं कि वह सचमुच में मरा नहीं, केवल बेहोश हुआ था और बाद में वह कब्र में से होश में आया या वह अपने अनुयायियों के दिलों में ''फिर से जीवित होगया'' परन्तु शारीरिक रूप में ''जी उठा'' नहीं। सुसमाचार के वृत्तांत में हम यह बताना चाहते हैं कि यीशु पूरी तरह से अथवा शारीरिक रूप में मरा। यदि वहां कोई डॉक्टर होता जिसके पास आधुनिक विश्लेषण के सभी औज़ार होते, तो वह यीशु को मृत घोषित करता क्योंकि उसे कोई पल्स न मिलती, दिमाग चलते न मिलता न सांस की नली। यीशु मर गया, दफ़नाया गया था। यह उसके जी उठने के लिए मंच तैयार करता है।

यदि यीशु दफ़नाया गया तो उसकी लाश के साथ कुछ होना आवश्यक था। यहूदी अधिकारियों या पिलातुस के लिए लाश को लाना कितना आसान होता यदि यह कब्र में होती! इसी प्रकार से वे मसीही लहर को आरम्भ होने से पहले ही दबा सकते थे। आश्चर्य के बात है क्योंकि वे दबा नहीं सकते थे।

खाली कब्र

यीशु के मित्र और शत्रु दोनों इस बात को समझते थे कि कब्र खाली है। जब स्त्रियां रविवार प्रात: कब्र पर गईं तो उन्हें यह खाली मिली थी। किसी प्रकार इसकी व्याख्या की जानी आवश्यक है। क्या वे गलत कब्र पर चली गईं, जिसमें कोई नहीं था? लगता नहीं है, क्योंकि मरकुस 15:47 यीशु के दफ़नाए जाने के विवरण में यह टिप्पणी जोड़ देता है: ''और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं, कि वह कहां रखा गया है।'' लूका 23:55 कहता है, ''और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे-पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है।'' मरकुस और लूका दोनों ने वे बातें कहीं जो इस मान्यता से पहले आती हैं कि स्त्रियां भोर के मध्म प्रकाश में खो गईं और किसी गलत कब्र में चली गईं।

यीशु की खाली कब्र के लिए कुछ व्याख्या दी जानी आवश्यक है। यही एकमात्र तर्कसंगत बात है, या नहीं? यदि अधिकारियों ने पाया कि आरलिंग्टन नेशनल सिमेटरी में जॉन एफ. कैनेडी की कब्र वास्तव में खाली हो तो क्या आप मानेंगे कि लाश का पता ठिकाना ढूंढ़ने के लिए पड़ताल नहीं की गई होगी? यह बताने के लिए कि क्या हुआ हर जगह तलाश की जाएगी। कहीं न कहीं तो लाश अवश्य होगी। हां यीशु की लाश भी इससे अलग नहीं थी। यदि यह कब्र में नहीं थी तो फिर कहां थी?

जी उठने के विचार का विरोध करते हुए, कइयों ने यह ध्यान दिलाया है कि यह प्राचीन वास्तविकता से बढ़कर आधुनिक आविष्कार अधिक है इसलिए यह अधिक विश्वास करने वाला तर्क नहीं है। परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन दिए गए पतरस के प्रवचन पर विचार करें (प्रेरितों 2:22-36)। भजन संहिता 16 के आधार पर जब पतरस ने घोषणा की कि परमेश्वर के ''पवित्र जन'' ने विनाश नहीं देखना था या उसकी देह गलनी नहीं थी, तो उसने यह दावा करने में कोई हिचक नहीं की, ''हे भाइयो, मैं कुलपति दाऊद के विषय में तुम साहस से कह सकता हूं कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहां विद्वमान है'' (प्रेरितों 2:29)। पतरस ने यीशु की खाली कब्र का विशेष रूप में उल्लेख तो नहीं किया पर संकेत ही काफ़ी है कि यीशु की कब्र खाली है जबकि दाऊद की नहीं। इसके अलावा प्रेरित जी उठे मसीह के चश्मदीद भी थे। स्वभाविक है कि जिंदा गवाहों के होने के बाद तो खाली कब्र की गवाही गौण ही होनी थी।

खाली कब्र की वास्तविकता और इसके महत्व को नकारने के सजावटी से नाटकीय प्रयास हुए हैं, परन्तु उन में से किसी को भी अधिक लोगों द्वारा माना नहीं गया, यहां तक कि संदेहवादी स्वभाव वाले विद्वानों में भी नहीं। यह सुझाव कि यीशु के शत्रु किसी प्रकार के जी उठने के झूठे दावे को रोकने के उद्देश्य से उसकी लाश चुरा ले गए केवल तर्कहीन दावा है: अन्तिम बात जो उन्होंने इच्छा करनी थी वह बिना लाश वाली कब्र होनी थी। इसके वैकल्पिक रूप में यह विचार कि यीशु के चेले ऐसा लगने के लिए कि जैसे वह सचमुच में जी उठा हो उसकी लाश चुरा ले गए, भी मानने में नहीं आता क्योंकि अन्त में वे अपने इस दावे के लिए ही मर गए। ''स्वून थ्यूरी'' कि यीशु वास्तव में मरा नहीं था और कब्र की ठण्डक में उसे होश आ गया था, फिर वह अपने आप वहां से निकल गया जैसे विचार गम्भीर विचार करने वाले नहीं हैं और न ही आम

तौर पर इसमें से कुछ निकलता है।

हाल ही में जीज़स सेमिनार के जॉन डोमिनिक क्रोसन ने यह तर्क देते हुए कि यीशु की लाश कभी दफ़नाई ही नहीं गई, अलग ही ढंग अपनाया है। पूरी तरह से अनुमान से काम करते हुए क्रोसन का कहना है कि यीशु के शत्रु ने उसकी लाश को ठीक से दफ़नाया नहीं होगा और उसके मित्रों ने ऐसा करने नहीं दिया होगा इसलिए उसकी लाश अवश्य जल्लादों द्वारा किसी खाली कब्र में फैंक दी गई होगी और कुत्तों ने उसे खा लिया होगा।[3] सुसमाचार की पुस्तकों को इस दावे को खारिज करने के लिए कि अरमितियाह का यूसुफ़ जो महासभा का एक सम्मानित सदस्य था, पिलातुस से यीशु की लाश मांगी और उसे दफ़नाया, क्रोसन ने केवल इतना दावा किया है (बिना ऐतिहासिक प्रमाण के) कि ऐसा नहीं हुआ। उसने कहा है, ''यदि उन में सामर्थ थी तो वे उसके मित्र नहीं थे; यदि वे उसके मित्र थे तो उनमें सामर्थ नहीं थी।''[4] स्रोतों से समर्थन देने वाले प्रमाण के बिना दावे करने का यह ऐतिहासिक ढंग नहीं है। क्रोसन का दावा कि यीशु की लाश दफ़नाई नहीं गई इस अर्थ में लिया जाना चाहिए कि यह खाली कब्र की सफ़ाई देने से बचने के लिए एक निराश उपाय है।

जी उठने की खबरें

एक और विचार वह ढंग है जिसमें जी उठने की खबर दी गई। जी उठने की वास्तविकता के विरोध में मानक आलोचनात्मक तथ्य यह है कि यह अपने नये धर्म को मान्यता दिलाने की कोशिश में आरम्भिक कलीसिया (कइयों का कहना है कि पौलुस ने इसका अविष्कार किया) का अविष्कार थी। यह विचार कि यीशु ने मसीहा या परमेश्वर का पुत्र होने का दावा नहीं किया, न उसने वास्तव में आवश्यकर्म किए या मुर्दों में से जी उठा। विचार यह है कि यीशु ने मसीहा होने का या परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया और न उसने वास्तव में आश्चर्यकर्म किए या मुर्दों में से जी उठा। अन्त में तर्क यह है कि सुसमाचार के लेखकों ने एक मनघड़ंत कहानी बना ली (या चारों ने अलग-अलग, क्योंकि वे हर बात में सहमत नहीं हैं) कि यीशु मुर्दों में से जी उठा और आज भी जीवित है। किसी आलोचक के लिए पहली नज़र में तो यह बहुत तर्कसंगत लगेगा, परन्तु इस तर्क में कुछ गम्भीर खामियां हैं।

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने कभी जी उठने की कहानी बनाई, तो उन्होंने इसे किसी व्यक्ति द्वारा *देखे जाने* की बात लिखी क्यों नहीं? सुसमाचार के चारों वृत्तांत बताते हैं कि यीशु मरा और गाड़ा गया, परन्तु फिर रविवार के दिन कब्र को खाली पाया। यीशु के कब्र में से निकलने का गवाह कोई नहीं था, केवल कब्र खाली थी और बाद में जी उठा मसीह। (मत्ती 28 :11 में यह सुझाव हो सकता है कि कब्र की रखवाली कर रहे सिपाहियों ने यीशु को निकलते देखा, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि यदि ''जो कुछ हुआ'' में यह शामिल हो।) अब यह किसी मिथ को बनाने का निराला और विश्वास न आने वाला ढंग है। यदि कहानी केवल घड़ी गई थी तो निश्चय ही चारों सुसमाचार प्रचारक (जैसा कि सुसमाचार के लेखकों को आम तौर पर कहा जाता है) कुछ आवश्यक गवाहियां देते। यह पुष्टि करने के लिए कि यीशु मुर्दों में से जी उठा यहूदी महायाजक हो सकता था या शायद पिलातुस भी। यह तथ्य कि चारों लेखकों ने गवाहों की सूची बढ़ाने का कोई प्रयास नहीं किया उनकी सच्चाई का तर्क देता है। अन्य शब्दों में जो कुछ

उन्हें वास्तव में मालूम था उससे अधिक बताने का प्रयास नहीं किया।

एक और विचार करने वाली बात है कि खाली कब्र और जी उठने तथा मसीह को देखने वाली सबसे पहली स्त्रियां ही थीं। आज के हमारे समय में कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु पहली सदी के यहूदी धर्म में यह गवाही जैसी कोई बात ही नहीं होगी। स्त्रियां न्यायालय में गवाही नहीं देती थीं और आम तौर पर उन्हें अविश्वसनीय गवाह माना जाता था। नया नियम यीशु के जी उठने की खबर देने में इस बात की झलक देता है। लूका साफ़ कहता है कि जब स्त्रियां चेलों के पास उन्हें बताने गईं तो उन्होंने क्या देखा है, तो ''स्त्रियों की बातें उन्हें कहानी सी जान पड़ी और उन्होंने उनकी प्रतीति न की'' (24:11)। इसके अलावा यीशु के नर अनुयायियों द्वारा विश्वास करने के धीमेपन को बहुत स्पष्ट बताती हैं। मत्ती 28:17 कहता है कि जब चेले गलील में पहाड़ पर जहां उसने कहा था यीशु से मिलें, ''उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को सन्देह हुआ।'' यह सुनकर कि यीशु जी उठा है और अन्य चेलों को उसने दर्शन दिया है, थोमा ने कहा, ''जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेदों में देख लूं, और किलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा'' (यूहन्ना 20:25)। कितना गलत है कि जो लेखक अविश्वासियों को जी उठने की सच्चाई का विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहे थे वही ये बताते हैं कि यीशु के सबसे नज़दीकी लोगों ने भी पहले विश्वास नहीं किया! कितनी विडम्बना है कि जी उठे मसीह को सबसे पहले देखने वालों में गवाह होने की योग्यता नहीं थी! यह कहानी बताना विश्वास दिलाने वाला नहीं है! कोई तो यही सोचेगा कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना जब तक इन बातों को जानते नहीं थे या सच नहीं मानते थे जब तक इन परेशान करने वाली बातों से बचते होंगे।

जी उठने के बाद के दर्शन

पांचवां हमें जी उठने के बाद दिखाई देने के बारे में बताया गया है। जब पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया के लिए ''पहले महत्व'' की बातें सामने रखीं तो मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के साथ उसने यह भी जोड़ा कि यीशु जी उठने के बाद अपने चेलों को कई बार दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:5-8; प्रेरितों 1:3 भी देखें, जो कहता है कि यह दर्शन चालीस दिनों के अन्तराल में हुए)। ये दर्शन केवल ग्यारह चेलों को नहीं थे, बल्कि ''पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ'' (1 कुरिन्थियों 15:6), याकूब (सम्भवतया यीशु का अपना भाई) और अन्त में पौलुस को था। इनमें से कुछ, परन्तु स्पष्ट रूप में सभी नहीं सुसमाचार के चारों वृत्तांतों में मिलते हैं। अन्यों का उल्लेख प्रेरितों 9; 22; 26 पौलुस के अपने मन परिवर्तन और प्रेरित होने की बुलाहट में मिलते हैं।

यीशु के अपने अनुयायियों में बहुत देर से विश्वास किया। इसलिए जी उठने के बाद के दर्शन यीशु के अपने चेलों को यकीन दिलाने के लिए आवश्यक थे कि वह सचमुच में मुर्दों में से जी उठा है और जी उठने के गवाह होने के योग्य बनाने के लिए, जो बाद में उनका मुख्य काम बन गया। यह तथ्य कि इतने अधिक लोगों को इतनी बार दर्शन दिए गए और पौलुस को व्यावहारिक रूप में उन गवाहों में से कुछ के साथ बातचीत करने के लिए बुलाया गया, उनकी ऐतिहासिकता का तर्क देता है।

मन परिवर्तन

यीशु के जी उठने के पक्ष में प्रमाण में शाऊल और याकूब के मन परिवर्तन हैं। यीशु की पहचान और जी उठने की सच्चाई पर तरसुस के शाऊल से अधिक संदेहवादी कोई नहीं था। जो बाद में पौलुस प्रेरित के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह मसीह लहर का सताने वाला था (देखें प्रेरितों 9; 22; 26; गलातियों 1:13, 14; 1 तीमुथियुस 1:12-15)। प्रेरितों के काम की पुस्तक उसे कलीसिया के सबसे बड़े शत्रु के रूप में प्रस्तुत करती है और दिखाती है कि उसके मन परिवर्तन के बाद कलीसिया को अभुतपूर्व शांति मिली (9:31)। इसी प्रकार से पौलुस ने लिखा है कि यीशु ने ''याकूब को'' दर्शन दिया (1 कुरिन्थियों 15:7)। उसने इससे पहले ''बारहों को'' (आयत 5) और ''सब प्रेरितों को'' (आयत 7) दिखाई देने की बात लिखी, इसलिए लगता है कि यह याकूब प्रेरित नहीं था। यह याकूब कौन हो सकता है और पौलुस ने इसे दिखाई देने की बात को इतना महत्व क्यों दिया।

अधिक सम्भावित व्याख्या यही है कि यह याकूब यीशु का भाई था जो आरम्भि कलीसिया में अगुआ बन गया था और अधिक सम्भावना यह है कि नये नियम में याकूब के पत्र का लेखक है। पौलुस की तरह याकूब भी इस दर्शन के बाद विश्वासी बन गया था। मरकुस 3:21 बताता है कि किसी समय यीशु का परिवार ''उसे पकड़ने के लिए निकले, क्योंकि वे कहते थे कि उसका चित ठिकाने नहीं है।'' अन्य शब्दों में यीशु के ग्रहनगर के लोगों का विचार था कि उसकी बातें और काम पागलपन हैं और परिवार उसको पकड़ने के लिए निकल पड़ा था। इससे साफ़ पता चलता है कि जब भीड़ ने यीशु से कहा कि ''देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं'' तो उसका उत्तर यह क्यों था ''जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन और माता है'' (मरकुस 3:31-35)। यूहन्ना 7:5 कहता है कि ''उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे''; तौभी प्रेरितों 1:14 कहता है कि जी उठने और स्वर्ग पर उठा लिए जाने के बाद, शेष ग्यारह प्रेरित ''कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसकी भाइयों के साथ एक चित होकर प्रार्थना में लगे रहे।'' स्पष्टतया क्रूस पर चढ़ाए जाने और प्रेरितों 1 के बीच में कहीं याकूब विश्वासी बन गया था। जी उठने के बाद का दर्शन से निश्चित रूप में पौलुस की तरह याकूब के मामले में जिम्मेदार होगा औरा शायद किसी भी अन्य व्याख्या से अधिक संतुष्ट करने वाला क्योंकि दोनों ही आरम्भ में किसी प्रकार याकीन नहीं करते थे।

बलिदानपूर्वक समर्पण

चेले जी उठने के प्रचार के लिए मरने को तैयार थे। आरम्भिक प्रेरितों में सभी ''यूहन्ना और नि:संदेह यहूदा को छोड़'' अपनी इस गवाही के कारण शहीद हुए थे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और वह मुर्दों में से जी उठा था। किसी ऐसी बात के लिए जिसे वह जानते हों कि झूठ है मृत्यु का सामना करने को तैयार होने की बात को समझाना कठिन होगा। निश्चय ही कम से कम उनमें से एक अवश्य कमज़ोर पड़ जाता और पूरी कहानी का झूठ खोल देता। ऐसा कोई ऐतिहासिक परिणाम नहीं है कि उनमें से किसी ने ऐसा किया हो।

कलीसिया

ऐतिहासिक आधार पर कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि कलीसिया यीशु की मृत्यु के बाद अचानक और तेज़ी अस्तित्व में आई और तेज़ी से फैल गई। कलीसिया आज के दिन भी इस ऐतिहासिक घटना के लिए विशेषक इस तथ्य के प्रकाश में कि यीशु के आरम्भिक चेलों को इतनी बार सताया जाता था और यहां तक कि मार भी डाला जाता था, इसके पीछे अवश्य ही कोई ऐतिहासिक कारण है। कई लहरें सताव में पैदा हुईं और बढ़ी। मसीहियत को जो बात अलग करती है वह अचानकता है जिससे यह दृश्य पर और बड़ी स्पीड से वह बढ़ी। यह पक्का यकीन कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है और उसने अपने पीछे चलने वालों को अनन्त जीवन देने की पेशकश की है इस सब को ब्यान कर देगा। इसके अलावा किसी भी बात के होने की कल्पना करना कठिन है। जेम्स डी. जी. डन्न ने हाल ही में कहा है कि मसीही लहर को केवल उस प्रभाव के आधार पर सही ढंग से बताया जा सकता है जो यीशु ने अपने आरम्भिक चेलों पर डाला और यह कि सुसमाचार उस प्रभाव का परिणाम है जो उसने उन पर डाला। ''मसीहियत के ऐतिहासिक तथ्य को यीशु नासरी और उसके द्वारा छोड़े गए प्रभाव के ऐतिहासिक तथ्य के बिना ब्यान करना असम्भव है।''[5] वह ''प्रभाव'' उसके जी उठने के नये नियम के नियमों का कारण बना। बेन विट्रिंगटन त्रितीय ने इस निर्णय के साथ सहमति जताई है:

> ... क्रूसारोहरण के बाद, कलीसिया को चलाने के लिए आश्चर्यकर्म हुआ-वास्तव में, यीशु के अनुयायियों के भीतरी दायरे को चलाने के लिए भी। हमारे आरिम्भक स्रोत, अपने ही अंगीकार से, स्पष्ट हैं कि नर चेलों का लगभग पूरा भीतरी दायरे ने यीशु का इनकार किया, उसे छोड़ दिया या उससे धोख किया जबकि स्त्रियां उसे मरते हुए देखती रहीं और फिर कब्र तक जनाज़े के पास हार रखते तक। यह वह ऐतिहासिक घटना [जी उठने की] जिसने कठोर प्रवाह को बदल दिया, जिसके बिना यीशु की कहानी इतिहास के कुड़ेदान में रह जाती।[6]

क्या वह आज भी जीवित है?

यीशु मुर्दों में से जी उठा और आज भी जीवित है और स्वर्ग में अपने दाहिने हाथ है (देखें मरकुस 16:19)। मसीह विश्वास का यह आधार है। पौलुस ने लिखा:

> परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। ... क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले लाए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है (1 कुरिन्थियों 15:20-26)।

यीशु का निरन्तर जीवन विश्वासियों के भविष्य की आशा देता है, जब भी जब मृत्यु भी कोई समस्या नहीं रहेगी।

इसी प्रकार से यह तर्क देने के बाद कि यीशु ही अन्त में ''महायाजक'' है और मूसा के

अधीन सेवा करने वाले याजकों से श्रेष्ठ है, इब्रानियों 7:23-25 यह दावा करता है कि यीशु ''सदा तक रहता है'' और ''जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।'' यीशु की मृत्यु और जी उठने में विश्वास करने वालों को इस तथ्य में बड़ी शांति मिलती है कि वह न केवल मरा और जी उठा बल्कि सदा तक जीवित है और इस कारण वह उनकी सहायता कर सकता है। वह उनके लिए जो उसके पीछे चलते हैं परमेश्वर के साथ आत्मिक सिफ़ारिश करता है।

यीशु सचमुच मुर्दों में से जी उठा या नहीं का स्वाल एक निर्णाय स्वाल है। प्रमाण को देखें और फिर स्वयं निर्णय लें।

टिप्पणियां

[1]इन बिन्दुओं पर चर्चा गेरी एल. हैबरमास, ''वाय आई बिलीव द मिरेकल्स ऑफ़ जीज़स एक्चुअली हैपन्ड,'' एन. एल. गेसलर एंड पी. के. हॉफमैन, संस्क., *वाय आई एम ए क्रिश्चियन: लीडिंग थिंकर्स, एक्सप्लेन वाय दे बिलीव,* संशो. एंव विस्तृत संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2006), 126-34 में चर्चा की गई है। [2]हमें आरम्भ मसीहियत के किसी रूप का पता नहीं है-चाहे उन में से कइयों का अविष्कार चतुर विद्वानों द्वारा किया गया है-''जो अपने आप में इस बात की पुष्टि नहीं करता कि यीशु की शर्मनाक मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसे फिर से जिलाल दिया'' (एन.टी. राइट, *दि चैलेंज ऑफ़ जीज़स: रीडिस्कवरिंग हू जीज़स वास एंड इज़* [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1999], 126)। [3]जॉन डोमिनिक क्रॉसन, *जीज़स: ए रेवॉल्यूशनरी बायोग्राफी* (सेन फ्रांसिस्को: हारपरसनफ्रांसिस्को, 1995), 154. [4]जॉन डोमिनिक क्रॉसन, *दि हिस्टोरिकल जीज़स: द लाइफ़ ऑफ़ ए मेडिटेरियन जीज़ूस पीसेंट* (सन फ्रांसिस्को: हारपरसनफ्रांसिस्को, 1991), 393. [5]जेम्स डी. जी. डन, *ए न्यू परस्पेक्टिव ऑन जीज़स: व्हट क्वेस्ट फ़ॉर द हिस्टोरिकल जीज़स मिसड* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर एकेडिमक, 2005), 22-23. [6]सेन विदरिंग्टन इलिनोइस, *व्हट हैव दे डन विद जीज़स ? बियॉन्ड स्ट्रेंज थ्यूरीस एंड बैड हिस्टरी- वाय वी कैन ट्रस्ट द बाइबल* (सेन फ्रांसिस्को: हारपरसनफ्रांसिस्को, 2006), 11.